नव भारत
संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

ट्रंप की कार्यशैली पर जनता की चोट

अमेरिकी मध्यावधि चुनाव के नतीजे राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की राजनीति, नीतियों और कार्यशैली के लिए बड़ा राजनीतिक संदेश लेकर आए हैं. साफ है कि अमेरिकी मतदाताओं ने ट्रंप के नेतृत्व पर अपना असंतोष जाहिर करने के लिए मध्यावधि चुनाव को माध्यम बनाया है. डेमोक्रेटिक पार्टी की बढ़त को केवल रिपब्लिकन पार्टी की चुनावी हार के रूप में देखना पर्याप्त नहीं होगा. यह ट्रंप प्रशासन की कार्यप्रणाली के प्रति जनता की नाराजगी का भी संकेत है.

ट्रंप की राजनीति का आधार आक्रामक राष्ट्रवाद, अमेरिका फर्स्ट और दुनिया के दूसरे देशों पर आर्थिक दबाव बनाने की रणनीति रही है. लेकिन दूसरे कार्यकाल में उनकी नीतियों का असर अमेरिकी नागरिकों की रोजमर्रा की जिंदगी पर भी पड़ने लगा है. ईरान के साथ बढ़ता सैन्य तनाव, युद्ध की आशंका, ईंधन की कीमतों में उछाल और महंगाई ने आम अमेरिकी परिवारों की चिंता बढ़ाई है. अंतरराष्ट्रीय व्यापार पर मनमाने ढंग से टैरिफ लगाने की नीति ने अमेरिकी किसानों, छोटे कारोबारियों और उद्योगों के सामने भी मुश्किलें खड़ी की हैं. ट्रंप का दावा रहा है कि इन फैसलों से अमेरिका की आर्थिक ताकत बढ़ेगी, लेकिन मतदाताओं ने इसके लिए तत्काल चुकाई जा रही कीमत पर सवाल उठाए हैं. इसके अलावा राष्ट्रपति की कार्यशैली भी असंतोष की वजह बनी है.

लोकतांत्रिक व्यवस्था में राष्ट्रपति का पद केवल निर्णय लेने का अधिकार नहीं, बल्कि विभिन्न संस्थाओं, विपक्ष और सहयोगियों को साथ लेकर चलने की जिम्मेदारी भी है. ट्रंप की टकरावादी राजनीति, विरोधियों पर लगातार हमले और कई फैसलों में एकतरफा रवैये ने अमेरिकी लोकतांत्रिक संस्थाओं के सामने भी चुनौतियां खड़ी की हैं. चुनावी नतीजों को इसी व्यापक संदर्भ में देखना होगा. कुल मिलाकर ट्रंप के शेष कार्यकाल के दो वर्ष आसान नहीं होंगे. उनकी विधायी प्राथमिकताओं पर विपक्ष का नियंत्रण रहेगा. हालांकि, इसका अर्थ यह नहीं है कि राष्ट्रपति के सभी अधिकार समाप्त हो जाएंगे. विदेश नीति और प्रशासनिक फैसलों में व्हाइट हाउस की भूमिका बनी रहेगी. इन परिणामों का भारत पर भी असर पड़ सकता है. ट्रंप की टैरिफ नीति पहले ही भारत-अमेरिका व्यापार संबंधों में अनिश्चितता पैदा कर चुकी है.

कांग्रेस में डेमोक्रेटिक बहुमत बनने से व्यापार शुल्क, वीजा, आव्रजन और रणनीतिक साझेदारी जैसे मुद्दों पर अमेरिकी प्रशासन की जवाबदेही बढ़ सकती है. भारतीय आईटी कंपनियों और अमेरिका में काम करने वाले पेशेवरों के लिए वीजा नीति महत्वपूर्ण बनी रहेगी.भारत के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह होगी कि वह अमेरिकी राजनीति में किसी एक दल पर निर्भर रहने के बजाय अपने राष्ट्रीय हितों के आधार पर संबंधों को मजबूत करे. अमेरिका में सत्ता का समीकरण बदलने से अवसर भी पैदा होंगे और नई चुनौतियां भी.

दरअसल, इन चुनावों का सबसे बड़ा संदेश यही है कि दुनिया की सबसे पुरानी लोकतांत्रिक व्यवस्था में भी मतदाता आर्थिक परेशानियों, युद्ध की आशंकाओं और सत्ता के अहंकार को अनदेखा नहीं करते. लोकप्रियता स्थायी नहीं होती और राष्ट्रवाद का नारा भी महंगाई तथा रोजगार के सवालों का विकल्प नहीं बन सकता. ट्रंप के लिए यह केवल चुनावी झटका नहीं, बल्कि अपनी नीतियों और कार्यशैली पर पुनर्विचार करने का अवसर भी है.

हिंसा के बीच स्कूलों में असुरक्षित बचपन


योगेश कुमार गोयल

> अंतत : यह स्वीकार करना होगा कि बच्चों की सुरक्षा केवल विद्यालय प्रशासन या सरकार की जिम्मेदारी नहीं बल्कि परिवार, समाज, शिक्षकों, तकनीकी कंपनियों और प्रत्येक नागरिक का साझा दायित्व है. जिस समाज में बच्चों को अपने सहपाठियों से भय लगे, जहां विद्यालय में उनकी सुरक्षा सुनिश्चित न हो और जहां डिजिटल दुनिया उनके मानसिक स्वास्थ्य के लिए खतरा बन जाए, वहां शिक्षा के वास्तविक उद्देश्यों की कल्पना भी अधूरी है. पंचकूला की घटना को कुछ दिनों की सनसनी बनाकर भुला देना उस मासूम बचपन के साथ अन्याय होगा, जिसकी सुरक्षा में हम सभी कहीं न कहीं विफल हुए हैं. अब समय केवल चिंता व्यक्त करने या संवेदनाएं प्रकट करने का नहीं बल्कि ठोस सुधारात्मक कदम उठाने का है. हमें ऐसे विद्यालय बनाने होंगे, जहां हर बच्चा बिना भय के अपनी बात कह सके, सम्मान के साथ सीख सके और सुरक्षित वातावरण में अपना भविष्य गढ़ सके. बच्चों के हाथों में किताबें, कलम और सपने होने चाहिएं, हिंसा के हथियार नहीं. सुरक्षित बचपन ही स्वस्थ समाज और सशक्त राष्ट्र की सबसे मजबूत नींव है.

विद्यालय किसी भी बच्चे के जीवन में केवल अक्षरज्ञान प्राप्त करने का स्थान नहीं बल्कि उसके व्यक्तित्व, विचारों, व्यवहार, संवेदनाओं और सामाजिक चेतना के निर्माण की पहली महत्वपूर्ण प्रयोगशाला होता है. माता-पिता अपने बच्चों को विद्यालय इसलिए भेजते हैं कि वहां वे ज्ञान अर्जित करें, मित्रता करना सीखें, अनुशासन और सहयोग की भावना विकसित करें तथा अपने सपनों को साकार करने की दिशा में आगे बढ़ें लेकिन जब यही विद्यालय बच्चों के लिए भय, अपमान, प्रताड़ना और हिंसा का केंद्र बनने लगें तो यह केवल शिक्षा व्यवस्था की विफलता नहीं बल्कि संपूर्ण समाज के नैतिक और मानवीय चरित्र पर गंभीर प्रश्नचिह्न है. आज बच्चों के बीच बढ़ती आक्रामकता, मारपीट, धमकाने, मानसिक प्रताड़ना और साइबर बुलिंग की घटनाएं जिस तेजी से सामने आ रही हैं, वे बचपन की सुरक्षा को लेकर गहरी चिंता पैदा करती हैं.

इसी गंभीर चुनौती के प्रति वैश्विक जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से प्रत्येक वर्ष नवंबर के पहले गुरुवार को 'स्कूलों में हिंसा और बदमाशी (साइबर बुलिंग सहित) के विरुद्ध अंतर्राष्ट्रीय दिवस' मनाया जाता है. इस वर्ष यह दिवस 5 नवंबर को मनाया जा रहा है. यूनेस्को के सदस्य देशों ने 2019 में इस दिवस को मनाने का निर्णय लिया था और इसका पहला आयोजन 2020 में हुआ था. इस वर्ष इसकी थीम है 'हर शिक्षार्थी सुरक्षित और स्वस्थ: वादे से व्यवहार तक'. यह थीम केवल एक औपचारिक संदेश नहीं बल्कि दुनिया की शिक्षा प्रणालियों, सरकारों, विद्यालयों, शिक्षकों और अभिभावकों के सामने एक स्पष्ट चुनौती रखती है कि बच्चों की सुरक्षा के संबंध में की गई घोषणाओं को वास्तविक जीवन में प्रभावी कार्रवाई में बदला जाए.

स्कूलों में हिंसा के विरुद्ध अंतर्राष्ट्रीय दिवस

इस दिवस का महत्व इस वर्ष पंचकूला के एक सरकारी विद्यालय में हुई दिल दहला देने वाली घटना के संदर्भ में और बढ़ जाता है. 28 अक्तूबर को विद्यालय में तीसरी कक्षा के आठ वर्षीय छात्र द्वारा छह वर्षीय छात्रा पर कथित रूप से ईंट, गमले और अन्य वस्तुओं से बेरहमी से हमला किए जाने की घटना ने पूरे समाज को झकझोर दिया. बच्ची को गंभीर चोटें आई और उसे चंडीगढ़ के पीजीआई में उपचार के लिए भर्ती कराना पड़ा. इस घटना का सबसे चिंताजनक पहलू यह है कि हिंसा करने वाला भी बच्चा है और उसका शिकार बनी बच्ची भी. यह किसी व्यस्क अपराधी द्वारा बच्चे के विरुद्ध किया गया अत्याचार नहीं बल्कि बाल मन में पनप रही असामान्य आक्रामकता और बच्चों की सुरक्षा व्यवस्था में मौजूद गंभीर खामियों का संकेत है. ऐसे में यह विचारणीय है कि बच्चों के सामने किस प्रकार की डिजिटल सामग्री परोसी जा रही है, वे घर और विद्यालय में किस तरह के व्यवहार को देखते हैं तथा उनकी भावनात्मक समस्याओं को समझने के लिए कितनी गंभीरता से प्रयास किए जा रहे हैं.

विद्यालयों में हिंसा हमेशा गंभीर शारीरिक हमलों के रूप में ही सामने नहीं आती. किसी बच्चे को उसके रंग, रूप, भाषा, आर्थिक स्थिति, शारीरिक बनावट, पारिवारिक पृष्ठभूमि, परीक्षा में प्रदर्शन अथवा किसी अन्य भिन्नता के कारण चिढ़ाना, उपनाम देकर अपमानित करना, समूह से अलग रखना, धमकाना, डराना और बार-बार मानसिक रूप से प्रताड़ित करना भी बदमाशी के ही रूप हैं.

वर्ष 2026 की थीम का वास्तविक संदेश यह है कि विद्यालयों की सुरक्षा केवल सरकारी नीतियों और कागजी घोषणाओं तक सीमित नहीं रहनी चाहिए. इसके लिए सरकारों को पर्याप्त बजट, प्रभावी निगरानी, प्रशिक्षित शिक्षक, मानसिक स्वास्थ्य सेवाएं और डिजिटल सुरक्षा संबंधी कार्यक्रम उपलब्ध कराने होंगे. विद्यालय प्रबंधन को स्पष्ट जवाबदेही के साथ सुरक्षा नीतियां लागू करनी होंगी. शिक्षा व्यवस्था में सहानुभूति, लैंगिक समानता, विविधता के प्रति सम्मान, अहिंसा और भावनात्मक शिक्षा को उचित स्थान देना होगा. बच्चों को यह समझाना होगा कि किसी की कमजोरी का मजाक उड़ाना बहादुरी नहीं बल्कि उसकी सहायता करना वास्तविक मानवीय गुण है.

बीजेपी के खेमे में जा रहे विपक्षी विधायक

राजनीति में निष्ठा या सिद्धांतवादिता होती तो पंजाब में आम आदमी पार्टी के 3 विधायक अपनी पार्टी छोड़कर बीजेपी में शामिल नहीं हुए होते ! इसी तरह बिहार में निर्दलीय निर्वाचित 2 विधानपरिषद सदस्यों ने बीजेपी जॉइन कर ली.



राजनेता जिधर अपना भविष्य सुरक्षित देखते हैं, उधर चले जाते हैं. फरवरी-मार्च में पंजाब विधानसभा चुनाव होने की संभावना है. वहां सनौर के विधायक हरमीतसिंह पठानमाजरा, सामाना के विधायक चेतनसिंह जौरामाजरा व अमृतसर उत्तर के विधायक कुंवर विजय प्रताप सिंह 'आप' छोड़कर बीजेपी में शामिल हो गए. बीजेपी के पंजाब प्रदेश अध्यक्ष केवलसिंह ढिल्लों ने इन विधायकों का अपनी पार्टी में स्वागत करते हुए कहा कि यह सभी राजनीतिक, सामाजिक और प्रशासनिक अनुभव वाले नेता हैं, जो बीजेपी के विजय अभियान को मजबूती देंगे. ढिल्लों ने पंजाब में सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी को डूबता जहाज बताया तथा वादा किया कि बीजेपी इन नेताओं को उनके निर्वाचन क्षेत्रों से पार्टी टिकट देगी. इस दौरान 'आप' ने विधानसभा अध्यक्ष को याचिका देकर जौरामाजरा और पठानमाजरा को दल-बदल विरोधी कानून के तहत अयोग्य घोषित करने की मांग की है. इन दोनों ने विधानसभा से इस्तीफा दिए बगैर ही दल-बदल कर लिया. 2024 में 'आप'ने भी अकाली विधायक सुखविंदर कुमार को अपनी पार्टी में शामिल किया था, लेकिन उन पर दल-बदल विरोधी कानून में कार्रवाई नहीं हुई थी और वह विधायक बने रहे. बिहार में विधानपरिषद के लिए निर्दलीय रूप में निर्वाचित बंसीधर ब्रजवासी और राहुल राज सत्तारूढ़ बीजेपी में शामिल हो गए. इसके विरोध में जनसुराज पार्टी का एक प्रतिनिधिमंडल विधानपरिषद सभापति रामबचन राय से मिला और इन दोनों की सदस्यता तत्काल रद्द करने की मांग की. राजद और कांग्रेस ने भी इस मांग का समर्थन किया. संविधान की 10वीं अनुसूची का पैरा 2(2) कहता है कि यदि कोई निर्दलीय उम्मीदवार चुने जाने के बाद कोई पार्टी जॉइन करता है, तो उसे सदन की सदस्यता के लिए अयोग्य घोषित किया जाए. यह कानून मनोनीत सदस्यों पर लागू नहीं होता.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

ग्वालियर चंबल डायरी

दिल्ली रैली को हल्के में लेना महंगा पड़ा युकां के जिलाध्यक्षों को


हरीश दुबे

इंडिया गठबंधन ने इसी पहली तारीख को कथित वोट चोरी के खिलाफ दिल्ली में 'वोट बचाओ, देश बचाओ' रैली रखी थी. इस रैली को हल्के में लेना भिंड और गुना के युवक कांग्रेस अध्यक्षों को महंगा पड़ा है. उन्हें पार्टी से सस्पेंड कर दिया गया है. कार्रवाई की गाज सिर्फ ग्वालियर संभाग के मनीष पुरोहित और पंचम भील जैसे जिलाध्यक्ष पर ही नहीं गिरी है बल्कि ग्वालियर की नुमाइंदगी करने वाले प्रदेश महासचिव शिवराज यादव सहित कई महासचिव, उपाध्यक्ष और सचिव भी राष्ट्रीय नेतृत्व के कोपभाजन बने हैं और इन्हें पद से रुखसत करते हुए निलंबन का फरमान थमा दिया गया है. इधर कार्रवाई का शिकार बने पदाधिकारी हैरत में हैं.

इनमें से ज्यादातर का यही कहना है कि पारिवारिक व्यस्तताओं के कारण उन्होंने दिल्ली रैली में शामिल न हो पाने की असमर्थता से पहले ही संगठन को वाकिफ करा दिया था. हां, इनमें से कुछ पदाधिकारियों ने पलटवार करते हुए कहा है कि उन्हें न तो कहीं से कॉल आया और न ही संगठन ने कार्यक्रम भेजा, जबकि पूर्व में पार्टी की तरफ से हर बड़े ईवेंट की जानकारी समय रहते भेजे जाने की परम्परा रही है ताकि वे तैयारी कर सकें लेकिन संगठन इस बार के मेगा इवेंट को लेकर इसी भुलावे में रहा कि अखबार पढ़कर सब पहुंच जाएंगे !

घर वापसी के प्लान पर चंबल वालों का वीटो...

पंजा पार्टी में कुछ बड़े सूबाई नेता चाहते हैं कि कुछ ही महीने बाद होने वाले निकाय चुनाव और 28 की चुनौती को देखते हुए ऑपरेशन घरवापसी चलाया जाए लेकिन ग्वालियर शहर और देहात, दोनों ही सदरों ने इस पर अपनी रजामंदी नहीं दी है. दरअसल मार्च 2000 में कमलनाथ सरकार के तख्तापलट के लिए ग्वालियर से चले ऑपरेशन लोटस के समय कई पुराने कांग्रेसियों ने व्यक्तिगत निष्ठा और अपने राजनीतिक भविष्य की चिंता करते हुए पंजे को छिटककर भगवा पहन लिया था. नए आशियाने में कुछ को ठीक ठाक ठौर मिला और कुछ अब तक हाशिए पर हैं. अब यही नवागत भगवाई कांग्रेस में स्थापित पुराने वर्चस्व को यादकर घर लौटने की जोड़तोड़ बिठा रहे हैं. पुराने लोगों से पार्टी को मजबूत मिलने की आस में सूबाई नेतृत्व इन्हें वापस लेने पर राजी है लेकिन यह शर्त भी लगा दी है कि जिलाध्यक्षों की सहमति के बिना वापसी के लिए घर के दरवाजे नहीं खुलेंगे. इस पर जिलाध्यक्षों का कहना है कि संकट में साथ छोड़ने वाले मौकासपरस्तों का क्या भरोसा, उन्हें वापस लेकर कांग्रेस के माहौल को प्रदूषित न किया जाए.

अरविंद के कार्यकर्ता मिलन से लालसिंह गायब

प्रदेश की राजनीति में भिंड भाजपा के चेहरे माने जाने वाले पूर्व मंत्रियों अरविंद भदौरिया और लालसिंह आर्य के बीच यूं तो अच्छे रिश्ते हैं और राज्यसभा के टिकट से लेकर संगठन की वजनदार जिम्मेदारियों को संभालने तक दोनों की ही ओर से एक समान दावेदारियां की जाती रही हैं. इसे स्वस्थ प्रतिस्पर्धा भी कह सकते हैं लेकिन दो दिन पूर्व कुछ ऐसा घटनाक्रम हुआ जिसने चंबल के सभी सियासतदानों का ध्यान खींचा. दरअसल, पार्टी के प्रदेश कोर ग्रुप के सदस्य अरविंद ने भिंड के एक होटल में अपने विधानसभा क्षेत्र का कार्यकर्ता मिलन समारोह रखा. इसके निमंत्रण पत्र से लेकर बैनर तक में भिंड के सभी बड़े नेताओं के फोटो लगाए गए, नाम भी छापे गए लेकिन गोहद के लालसिंह को यह खुशनसीबी नहीं मिली.

भाजपा असमंजस में! सतीश और सुरेन्द्र अब साथ-साथ हैं...



कांग्रेस की दिल्ली रैली निबट गई, जवाब में भाजपा ने भी प्रदेश के बड़े शहरों में 'लोकतंत्र बचाओ, अराजकता हटाओ' पदयात्रा कर लीं लेकिन सत्ता दल के तमाम बड़े सूरमाओं का शहर होने के बावजूद ग्वालियर में भाजपा अभी तक पदयात्रा नहीं कर सकी है. पार्टी के नेता राजू पलैया की मानें तो अभी तक भोपाल से कार्यक्रम नहीं आया है और अब दीवाली के बाद ग्वालियर में यह पदयात्रा होने की उम्मीद है, वैसे भी तीस नवंबर तक का समय भाजपा को अराजकता हटाने के लिए मिला है. इधर, कांग्रेस रामलीला मैदान में बड़ी रैली करने के बावजूद अभी तलक भले ही ज्ञानेश कुमार का इस्तीफा नहीं ले सकी हो लेकिन एक दूसरे से तंगदिली दिखाते रहे कांग्रेस के दो स्थानीय दिग्गजों शहर सदर सुरेन्द्र यादव और एमएलए सतीश सिकरवार के बीच मनमुटाव जरूर दूर करा दिया है. रैली की तैयारियों के लिए ग्वालियर में बैठकें करने से लेकर दिल्ली में प्रदर्शन करने तक दोनों ने एकजुटता दिखाई.

निशानेबाज

अमिताभ बच्चन की कृष्ण भक्ति, इसे क्यों दी जा रही चुनौती?

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, अमिताभ बच्चन उर्फ बिग-बी की कृष्ण भक्ति को विरोधियों की दी गई चुनौती क्यों माना जा रहा है. उन्होंने 'हाथी-घोड़ा पालकी, जय कन्हैयालाल की' कहकर भगवान श्रीकृष्ण के प्रति श्रद्धा व्यक्त की तो मीडिया ने इसका गलत अर्थ निकालकर इसे विरोधियों को ललकारने, चुनौती और धमकी देने वाला बयान परिभाषित कर दिया.'

हमने कहा, 'बात का बतंगड बनाने में क्या रखा है! भागवत कथा के दौरान कृष्ण जन्म मनाते हुए भक्तजन हर्षपूर्वक जोर से कहते हैं- 'हाथी दीन्हों, घोड़ा दीन्हों और दीन्हों पालकी, नंद के आनंद भयो, जय कन्हैयालाल की.' इसका अर्थ है कि कृष्ण जन्म की खुशी में नंदबाबा ने हाथी, घोड़ा और पालकी का दान किया. अमिताभ बच्चन का हाथी, घोड़ा जैसी चीजों से कोई संबंध नहीं है बल्कि उन्होंने तो फिल्म 'दीवार' में शशि कपूर से कहा था- 'मेरे पास बंगला



है, गाड़ी है, दौलत है, शोहरत है, तुम्हारे पास क्या है?' इसके जवाब में शशि कपूर ने कहा था- 'मेरे पास मां है!' रही बात पालकी की, तो बिग बी किसी भी पार्टी या नेता की पालकी नहीं ढो रहे हैं. फिल्म इंडस्ट्री में अक्षय कुमार, परेश रावल, अनुपम खेर और कंगना रनौत जैसे कलाकार मोदी भक्त हैं तो नसीरुद्दीन शाह खुद को अर्बन नक्सल कहकर मोदी विरोध दर्शा रहे हैं. जया बच्चन सपा की सांसद हैं लेकिन अमिताभ बच्चन का किसी भी पार्टी या राजनीति से कोई संबंध नहीं है. वह अपनी 84 वर्ष की उम्र में धार्मिक आस्था व्यक्त कर रहे हैं. वह पहले भी एक बार अपने बंगले से पैदल सिद्धि

विनायक का दर्शन करने गए थे. 40-50 साल पहले वह फिल्मों में एंग्री यंग मैन थे, अब वह सप्रचुअल ओल्ड मैन बन चुके हैं. वह 42 वर्षों से प्रति वर्ष 1 नवंबर को अपने चहेतों को अपने बंगले जलसा की गैलरी से दर्शन देते आ रहे हैं. इस बार उनका बंगला बम से उड़ाने की धमकी की वजह से उन्होंने पारदर्शक बुलेटप्रूफ शीशे के पीछे से अपने फैन को दर्शन देते हुए हाथ हिलाया. वह सदी के महानायक हैं जिनका किसी से विरोध नहीं है.'

शब्द-सागर 12429

- डॉ. सागर खादीवाला

1	2	3	■	4	5	6	■
7			■	8			9
■	10		11		■	12	
13	■	14		■	15	■	
16	17	■	18				
19		20		■		■	
■	■		■	21		22	■
23					■	24	

बाएं से दाएं
1. नन्हा प्यारा बच्चा 4. बलवान, सशक्त (सं.) 7. हिलोर, तरंग 8. नकल करने वाला 10. अज्ञात 12. हाथ, टैक्स 14. कांटे या अस्त्र के फल की वह फांस जो शरीर में टूटकर रह जाती है और दर्द करती है 16. तल्लीन 18. श्रीकृष्ण 19. एक राक्षस जिसे यह वरदान प्राप्त था कि वह जिस पर हाथ रख देगा वह भस्म हो जाएगा 21. पंजाब की एक मशहूर नदी 23. सहायक, मदद करने वाला 24. लंबा, ह्रस्व का उल्टा

ऊपर से नीचे
1. धोखा, कपट 2. आभूषण 3. नरमपड़ जाना या करना 4. प्रियतम, प्रेमपात्र, मूर्ति (उर्दू) 5. बगुला, कुबेर, एक असुर, सफेद (सं.) 6. प्रबल अभिलाषा 9. बलपूर्वक किसी के वस्त्र उतारना 11. शारीरिक कष्ट या यंत्रणा देकर धन छीन लेना 13. सुगंध, खुशबू (सं.) 15. जनक की पत्नी का नाम 17. जूते की फीता, चमड़े की कम चौड़ी और लंबी पट्टी (उर्दू) 20. सुख या आनंद देने वाला 21. बहुत दिनों तक 22. कृष्णपक्ष, अपकार, बुराई

Solution 12428

प्र	चा	रि	त	■	व	क्र	■
श्र	म	■	बा	र	ह	मा	सी
य	■	म	ही	प	■	नु	■
■	या	द	■	ट	क	सा	ल
अ	न	हो	नी	■	त	र	स
स	■	श	र	मा	ना	■	ल
रो	जा	■	व	ध्य	■	मू	सा
ह	प	■	ता	म	सी	■	ना

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में आर्थिक योजनाओं में सुधार होगा. मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी. वर्ष के मध्य में भाईयों के सहयोग से शत्रु पक्ष परास्त होगा. वाहन पशु आदि से लाभ होगा. आर्थिक क्षेत्र में कमी के कारण योजनायें वाधित होंगी. वर्ष के अन्त में वाणी में कठोरता तथा क्रोध बना रहेगा. प्रियजनों के कारण हानि हो सकती है.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को वाहन पशु आदि का लाभ होगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को शत्रु की गतिविधियों पर नजर रखकर कार्य करना हितकर रहेगा. शत्रु वर्ग परास्त होगा. कर्क राशि के व्यक्तियों को आर्थिक योजनाओं में वृद्धि होगी. सिंह राशि के व्यक्तियों को प्रियजनों की वाणी में कठोरता तथा क्रोध बना रहेगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को आर्थिक कार्यों में सावधानी रखनी चाहिये. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को समय लाभदायक रहेगा. यात्रा में उठाईगीरों से सतर्कता बांछनीय. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को परिजनों का अच्छा खासा सहयोग एवं मार्गदर्शन प्राप्त होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर, सुशील, व्यक्तित्ववान, मिलनसार, आकर्षक एवं तीव्र बुद्धि का होगा, स्वास्थ्य कुछ समय तक नरम गरम रहेगा. बुद्धिमत्ता अच्छी रहेगी, अनेक विद्याओं का ज्ञाता होगा, प्रवास का शौकीन रहेगा.

मेष- कार्यस्थल पर सहकर्मियों से परेशानी होगी, कार्यों में सावधानी रखें, रूकावट एवं असफलता मिल सकती है, परिश्रम अधिक करना पड़ेगा.

वृषभ- आपसी विवादों को टालने में ही लाभ है, घरेलू बातों पर अधिक ध्यान न दें, अतिथि आगमन का योग है, किसी अनसोचे कार्य में व्यस्तता रहेगी.

मिथुन- आकस्मिक लाभ की संभावना है, व्यापारिक समझौते अच्छा लाभ दिला सकते हैं, नौकरी एवं राजकीय कार्यों में सफ्लता मिलेगी, मन में संतोष बना रहेगा.

कर्क- कार्यक्षेत्र में कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पडेगा, धार्मिक कार्यों में खर्च होगा, आर्थिक समस्या हल होगी, यात्रा लाभदायक रहेगी.

सिंह- चल रहे कार्य में लाभ की संभावना से नई योजना हाथ में ले सकते हैं, शत्रु वर्ग परास्त होगा, धार्मिक कामकाज बनने का योग है. व्यापार को बढ़ाने का प्रयास करें,

कन्या- भाग्यवर्धक काम बनने का योग है, नए संपर्क आगे बढ़ने में सहायक रहेंगे, नियमितता का ध्यान रखकर कार्य करना हितकर रहेगा.

तुला- साझेदारी की योजना में पूँजी लगाने से लाभ होगा, किसी कार्य में परिश्रम अधिक करना होगा, खर्च की अधिकता रहेगी, शत्रु नुकसान पहुंचाने का प्रयास करेंगे.

वृश्चिक- पुराने कर्ज से छुटकारा मिल सकता है, उत्तराधिकार में संपतित मिल सकती है, परिवार में मतभेद रहेगा, दूसरों के कारण परेशानी होगी.

धनु- आकस्मिक लाभ की उम्मीद है, दोहरे लाभ का अवसर मिल सकता है, वाहन सावधानी से चलायें, अनावश्यक विवाद को टालें, अतिथि आगमन होगा.

मकर- व्यापारिक अनुबंध लाभदायी रहेगा, मित्रों का सहयोग रहेगा, साहस पराक्रम बढ़ेगा, यश की वृद्धि होगी, नई योजनाओं में लाभ होगा.

कुम्भ- कार्यक्षेत्र में लंबित मामले निपटाना पड़ेंगे, गुमी वस्तु मिल सकती है, कौटुम्बिक सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी, आपसी लोगों को अधिक भरोसा न दें.

मीन- जमीन जायजाद प्रापर्टी का लाभ होगा, मन में शांति और संतोष रहेगा, आमोद प्रमोद, के कार्य में व्यय होगा, भरपूर सहयोग प्राप्त होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

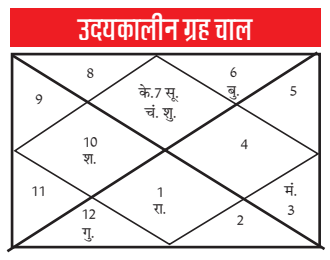

पंचांग

रा.मि. 14 संवत् 2083 कार्तिक कृष्ण एकादशी गुरूवासरे दिन 11/58, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रे रातअंत 5/35, ऐन्द्र योगे दिन 9/28, बालव करणे सू.उ. 6/30, सू.अ. 5/30, चन्द्रचार सिंह दिन 11/50 से कन्या, पर्व- रम्भा एकादशी व्रत, गोवत्स द्वादशी, शु.रा. 6,8,9,12,1,4 अ.रा. 7,10,11,2,3,5

शुभांक- 8,0,5.

व्यापार भविष्य

कार्तिक कृष्ण एकादशी को उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के प्रभाव से सरसों, गुड़, खांड, बाजरा, सुपारी, सौंठ, सोना, आदि में तेजी होगी, रूई, कपास, चांदी, में मंदी होगी, वायदा विचार आज के बने भाव पर व्यापार कर लाभ उठायें.

भाग्यांक 3754 है.

SUDOKU 7561

8	2			6			1	
	6		8	9			7	5
3			1					2
	3		4				6	
6		2		1		4		3
	8				5		2	
2					3			1
5	1			7	6		4	
	9			4			3	6

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7560

8	6	4	2	7	9	5	3	1
7	3	9	1	8	5	2	6	4
1	5	2	4	3	6	7	9	8
4	1	3	8	6	7	9	5	2
5	8	6	9	2	4	3	1	7
2	9	7	5	1	3	8	4	6
9	4	8	7	5	1	6	2	3
3	7	5	6	4	2	1	8	9
6	2	1	3	9	8	4	7	5